International Journal of Applied Research 2021; 7(10): 77-79

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(10): 77-79
www.allresearchjournal.com
Received: 10-08-2021
Accepted: 12-09-2021

धनंजय कुमार
शोध छात्र, स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार, भारत

Corresponding Author:
धनंजय कुमार
शोध छात्र, स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार, भारत

ग्रामीण स्वास्थ्य एवं चिकित्सा संस्कृति के परिवर्तित प्रतिमान

धनंजय कुमार

प्रस्तावना

शरीर और मन दोनों की स्वस्थता जीवन में सफलता के साथ आनंदमय जीवन जीने का सूत्र है। अच्छा मानसिक स्वास्थ्य हमें अच्छा महसूस कराने के साथ शारीरिक क्षमता और आत्मविश्वास प्रदान करता है। अच्छा शारीरिक स्वास्थ्य हमारी परेशानी के समय में मदद करता है, वहीं खराब शारीरिक स्वास्थ्य हमें अधिक कमजोर बनाता है और बीमारियों के लिए खतरा बढ़ाता है। मानसिक स्वास्थ्य धीरे–धीरे शारीरिक स्वास्थ्य को कमजोर कर देता है। इसलिए, शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी गंभीर रहने की जरूरत है।

मेंटल एवं फिजिकल रूप से फिट इन्सान को हीं स्वस्थ माना जाता है। किन्तु ऐसा नहीं है। वास्तव में स्वास्थ्य का अर्थ है – व्यक्ति की क्रियाशीलता। जो व्यक्ति तन मन से किसी कर्म में सतत् लगा है, उसे हीं स्वस्थ व्यक्ति की संज्ञा दी जाती है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। यह कहावत शतप्रतिशत सही है। स्वास्थ्य सभी के लिए आवश्यक है। एक स्वस्थ व्यक्ति ही किसी भी प्रकार के कार्य को सुचारू रूप से कुशलतापूर्वक कर सकता है।

डब्लू.एच.ओ. के अनुसार समग्र स्वास्थ्य का अर्थ सिर्फ बीमारी व दुर्बलता का होना नहीं है। समग्र स्वस्थ व्यक्ति की वह स्थिति है जब वह शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक रूप से भी बेहतर स्थिति में हो। इतना ही नहीं वह समाज तथा समुदाय के साथ अपना समायोजन भी आसानी से कर सकता हो। हाँ, एक रोगी व्यक्ति को स्वस्थ व्यक्ति नहीं कहा जा सकता है, लेकिन बीमारी स्वास्थ्य मापन का एकमात्र मापदंड नहीं माना जा सकता है।

अतः स्वास्थ्य का अर्थ स्वयं पर ध्यान केन्द्रित करते हुए जीने की अच्छी आदतों को अपनाना है। किसी भी क्षेत्र में व्यक्ति को सफल होने के लिए स्वस्थ्य होना पहला शर्त है।

भारतीय अर्थव्यवस्था के समुचित विकास के लिए उसके कार्यबल का निरोगी होना बहुत जरूरी है। यही कारण है कि सरकार का इस संबंध में एक बेहतर दृष्टिकोण काम कर रहा है। सरकार की नीति में रोग पर नहीं बल्कि निरोग पर सबसे ज्यादा जोर दिया गया है। लेकिन ग्रामीण भारत के लिहाज से सबसे अहम लक्ष्य है स्वास्थ्य पर खर्च को जीडीपी के 2.5 प्रतिशत तक ले जाना, प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा पर ध्यान देना, स्वास्थ्य सेवा की लागत कम करना और मृत्यु दरों में कमी लाना।

सही मायने में देखा जाय तो आदर्श गांव की परिकल्पना ही समग्र विकास की धारणा पर आधारित है। सभी गांव यदि अपने गांव को आदर्श बनाने की ठान ले तो स्वस्थ समाज के सभी मानकों को पूरा किया जा सकेगा और स्वस्थ समाज हीं एक स्वस्थ देश का निर्माण कर सकता है।

स्वस्थ भारत की कल्पना को साकार करने के लिए ग्रामीणों का स्वस्थ होना आवश्यक है। यदि हमारा गांव स्वस्थ हो जाय तो इसका स्पष्ट अर्थ है कि देश की आबादी का 70 प्रतिशत हिस्सा स्वस्थ हो गया। अतएव गांवों में स्वास्थ्य परिदृश्य को मजबूत करना अतिआवश्यक है। किसी भी देश की आर्थिक प्रगति में वहां के लोगों का स्वास्थ्य महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

भारत जैसे विशाल और विकासशील देश के लिए सस्ती, सुलभ, सुरक्षित और आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाएं जुटाना आसान काम नहीं है। बीते कुछ वर्षों में सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर देश को एक नई दिशा दी गई है। वर्तमान सरकार यह लक्ष्य लेकर चल रही है कि देश के गरीब और मध्यम वर्ग को बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के लिए भटकना न पड़े, अनावश्यक खर्च न करना पड़े। राज्य सरकारों के साथ मिलकर केन्द्र सरकार देशभर में स्वास्थ्य सेवा से जुड़ा आधुनिक बुनियादी ढांचा खड़ा करने की दिशा में तेजी से कार्य कर रही है। सरकार के निरंतर प्रयासों से आज एक ओर देश में अस्पतालों में बच्चों को जन्म देने का प्रचलन बढ़ा है तो दूसरी ओर गर्भवती महिलाओं और नवजात शिशुओं के स्वास्थ्य की निरन्तर जांच, टीकाकरण में पांच नई वैक्सिन जुड़ने से मार्तृ और शिशु मृत्यु दर में अभूतपूर्व कमी आई है। इन प्रयासों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सराहा गया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शब्दों में ''सरकार का विजन सिर्फ अस्पताल, बीमारी और दवाई और आधुनिक सुविधाओं तक ही सीमित नहीं है। कम खर्च पर देश के हर व्यक्ति को इलाज सुनिश्चित हो, लोगों को बीमार बनाने वाले कारणों को खत्म करने का प्रयास हो, इसी सोंच के साथ नेशनल हेल्थ पॉलिसी का निर्माण किया गया है।'' आयुष्मान भारत इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इस योजना के तहत देशभर में लगभग डेढ़ लाख यानी देश की हर बड़ी पंचायत में एक स्वास्थ्य और कल्याण केन्द्र स्थापित करने का काम चल रहा है। आयुष्मान भारत के संकल्प के साथ प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना चला रही है। आयुष्मान भारत में प्रधानमंत्री राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा मिशन भी शामिल है। यह दस करोड़ से अधिक लोगों को कवर कर रहा है। इस मिशन के द्वारा लगभग 50 करोड़ लोग लाभान्वित होंगे। प्रति परिवार प्रति वर्ष 5 लाख रूपए तक बीमा कवच अस्पताल में भर्ती होने पर मिल रहा है। ऐसी योजनाओं से गरीब का बीमारी पर होने वाला खर्च कम हो गया है।

बेहतर मानव संसाधन के लिए समाज का स्वस्थ होना बेहद जरूरी है। यही वजह है कि परिवार कल्याण और स्वास्थ्य सेवा योजनाएं केन्द्र सरकार की प्राथमिकता पर रही हैं। योजनाओं का ढांचा कुछ इसतरह तैयार किया गया है कि स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ समाज के सबसे निचले स्तर के व्यक्ति तक पहुंच सके।

भारतीय संस्कृति प्रधानतः एक ग्रामीण संस्कृति है। भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक ढांचे में स्वास्थ्य, रोग व चिकित्सा संबंधी विश्वासों, मूल्यों एवं व्यवहारों का पृथक अस्तित्व न होकर सम्पूर्ण संस्कृति का अभिन्न अंग है।

यहां रोग को एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना के रूप में देखा जाता है। ऐसी भी धारणा प्रचलित है कि परम्परागत संस्कारों को तोड़ने के परिणामस्वरूप विभिन्न रोग उत्पन्न होते हैं। ग्रामीण परिवेश में मानव जीवन का प्रत्येक पक्ष परम्परागत मूल्यों एवं व्यवहार प्रतिमानों से संचालित व निर्देशित होता है। सामाजिक निषेधाज्ञाओं के द्वारा भी जनसमुदाय का जीवन नियमित होता है। ग्रामीण समाज में स्वास्थ्य सुरक्षा, रोग एवं बीमारियों में रोग को देवी देवताओं का अभिशाप, प्रेतात्माओं का प्रभाव, ग्रहों का प्रभाव तथा सर्वोच्च शक्ति की इच्छा का प्रतिफल माना जाता है। ईश्वरन ने दक्षिण भारत में प्रचलित मान्यताओं के आधार पर रोगों को पांच भागों में विभाजित किया है– ईश्वर प्रदत्त साधारण रोग, ईश्वर प्रदत्त गंभीर रोग, तात्कालिक शारीरिक कारणों से उत्पन्न रोग, महावारी तथा जादू टोने से उत्पन्न रोग।

हमारे यहां अनेक प्रकार की चिकित्सा पद्धतियां मौजूद हैं। जैसे–घरेलू चिकित्सा से लेकर धार्मिक चिकित्सा तक। इसके अन्तर्गत झाड़–फूंक, कर्मकाण्ड पूजा–पाठ और मनौती आदि की धार्मिक पद्धति है। दूसरी ओर घरेलू चिकित्सा में घरेलू दवाइयों संबंधी ज्ञान का एक विशाल भण्डार है। अतएव लोक चिकित्सा सबसे पुरानी पद्धति है। इसका ज्ञान समुदाय के सदस्यों को कम या अधिक मात्रा में अवश्य होता है।

हमारे ग्रामीण समाज में आज भी लोक चिकित्सा पद्धति अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाकर रखा है। वैसे इसके अतिरिक्त आयुर्वेदिक, यूनानी, होम्योपेथिक तथा पश्चिमी चिकित्सा पद्धति सभी एक साथ मौजूद हैं।

ग्रामीण समाज के परिवेश में वैसे व्यक्ति को स्वस्थ कहा जाता है जो गरिष्ठ खाद्य पदार्थों को खाने की क्षमता रखता हो, मांस–पेशियों वाला शरीर हो, कठिन श्रम करने की क्षमता रखता हो। किसी व्यक्ति में यदि ये शारीरिक विशेषताएं मौजूद नहीं है तो वह व्यक्ति स्वस्थ व्यक्ति की श्रेणी में नहीं आ सकता है। ऐसी आम धारणा है कि नगरीय लोगों की अपेक्षा ग्रामीण समाज लोक चिकित्सा पद्धति को मान्यता देता है और लोक चिकित्सा के साथ अन्य चिकित्सा पद्धतियों का टकराव एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक घटना है। ग्रामीण भारत की लोक चिकित्सा के साथ विभिन्न पद्धतियों की अन्तर्क्रिया को भारतीय ग्रामीण चिकित्सा पद्धति की तस्वीर बदल रही है। परिणामस्वरूप चिकित्सा के समाजशास्त्र के क्षेत्र में समाज वैज्ञानिकों के लिए एक नया क्षेत्र का पदार्पण हुआ है।

शोध प्रारूपः प्रस्तुत शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य ''ग्रामीण स्वास्थ्य एवं चिकित्सा संस्कृति के परिवर्तित प्रतिमान'' का अध्ययन करना है। इसके अन्तर्गत हमारा उद्देश्य ग्रामीणों से स्वास्थ्य मूल्य एवं बीमारियों के संबंध में उनकी अभिवृत्तियों को जानना है। इसके अन्तर्गत हमारा उद्देश्य स्वास्थ्य व बीमारी के प्रति अतिरिक्त चिकित्सा मूल्यों की भूमिका को ज्ञात करना है। धर्मान्धता का रोग निदान के प्रति तार्किक दृष्टिकोण से संबंध ज्ञात करना है। एलोपैथिक का प्रभाव तथा ग्रामीण समाज में इसकी स्वीकार्यता से आ रहे परिवर्तनों की परीक्षा व समीक्षा करना रोग के कारकों के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव के संबंध में विचारों को जानने का प्रयास किया जायेगा।

हमारा अध्ययन क्षेत्र मानपुर गया जिला का एक ब्लॉक है। इस ब्लॉक से 160 उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त की गयी है। इनके लिए साक्षात्कार अनुसूची व अवलोकन पद्धति का प्रयोग किया गया है।

सारणी संख्या 1: रोग के सामान्य कारक

क्र.सं.	रोग के सामान्य कारक	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	खाने–पीने के सामान में मिलावट	80	50.00
2.	देवी–देवताओं का अभिशाप	54	33.75
3.	प्रशिक्षित चिकित्सकों का अभाव	26	16.25
	कुल योग	160	100.00

सारणी संख्या – 1 से स्पष्ट है कि 50.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि खाने–पीने की चीजों में मिलावट एक महत्वपूर्ण कारक है। बाजार से हम जो खाने की वस्तुएँ खरीदते हैं, उसमें मिलावट की जाती है। सब्जियों व फलों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए अधिक से अधिक रासायनिक पदार्थों एवं कीटनाशकों का प्रयोग किया जाता है। इसका परिणाम सामने है। आज लोग नई–नई बीमारियों से पीड़ित हैं। 33.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कथन है कि देवी–देवताओं का अभिशाप रोग का मुख्य कारण है जबकि 16.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि ग्रामीण इलाके में दक्ष चिकित्सकों का अभाव है।

उपर्युक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि 33.75 प्रतिशत उत्तरदाता इस विचार से सहमत हैं कि देवी–देवताओं का अभिशाप बीमारी का मुख्य कारण है। ऐसा विचार परम्परागत व अवैज्ञानिक सोच को प्रदर्शित करता है। ग्रामीण जीवन में स्वास्थ्य के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है क्योंकि उत्तरदाताओं ने खाने की वस्तुओं में मिलावट एवं दक्ष चिकित्सकों के अभाव को बीमारी का कारण बताया है। ये कारण वैज्ञानिक सोच को उजागर करता है।

इसप्रकार ग्रामीणों से रोग के सामान्य कारणों के संबंध में मनोवृत्ति प्रदर्शित हुयी है, लेकिन इस मनोवृत्ति में वैज्ञानिक कारकों के साथ–साथ परम्परागत सांस्कृतिक कारकों का भी समावेश मानते हैं।

सारणी संख्या 2: पौष्टिक भोजन की कमी के कारक

क्र.सं.	कारक	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	पौष्टिक भोजन की कमी	55	34.37
2.	शरीर में रोगाणुओं का प्रवेश	23	14.37
3.	स्वयं की लापरवाही	17	10.62
4.	पूर्व जन्म का फल व कुल देवी का अभिशाप	47	29.37
5.	नजर लगना	18	11.25
	कुल योग	160	100.00

सारणी संख्या–2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 34.37 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया है कि पौष्टिक भोजन की कमी के कारण बीमारी होती है और हम अक्सरहां बीमार हो जाते हैं जबकि 14.37 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि प्राकृतिक वातावरण काफी दूषित है, परिणामस्वरूप कई तरह के रोगों का शरीर में प्रवेश हो जाता है। 10.62 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि हमारी बीमारी का एक महत्वपूर्ण कारण हमारी लापरवाही है। हम अपने शरीर व स्वास्थ्य के प्रति बहुत ज्यादा लापरवाह होते हैं। हमारे पास पैसे नहीं होते कि अपने शरीर की जांच करवाएं या समय पर इलाज करवाएं, सबकुछ स्वयं ठीक हो जायेगा, अपने को समझाते हुए टालते रहते हैं और बीमारी गंभीर हो जाती है। 29.37 प्रतिशत एवं 11.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने क्रमशः बीमारी का कारण पूर्व जन्म का फल, भाग्य खराब होना व कुलदेवी का अभिशाप माना है।

इसप्रकार आधुनिक शिक्षा, आधुनिक चिकित्सा (एलोपैथी), शहरीकरण, आधुनिकीकरण एवं पश्चिमीकरण ने परम्परागत चिकित्सा संस्कृति के तत्वों को निरन्तर प्रभावित किया है। एलोपैथी का ग्रामीण संस्कृति में प्रवेश हो चुका है। अतएव चिकित्सा विज्ञान के प्रसार ने पारम्परिक विचारों को बहुत प्रभावित किया है।

ग्रामीण समाज में ऐसा देखा जाता है कि लोग घर से लेकर बाहर तक राजनीति, राजनीतिक दल, पेपर के समाचार, रेडियो एवं टेलीविजन का समाचार, लड़ाई–झगड़े, जाति तथा मुकदमेबाजी पर जमकर बहस व चर्चा करते हैं, किन्तु स्वास्थ्य के बारे में कभी चर्चा नहीं होती है। स्वास्थ्य स्वयं ठीक होने वाली चीज है, खाइए–पीजिए सब ठीक हो जाएगा, ऐसी धारणा स्पष्ट दिखती है। जब बीमारी व रोग प्रारम्भिक अवस्था में होता है तो साधारणतया वे घरेलू उपचार से ठीक होना चाहते हैं जब रोग बढ़ जाता है तो वे इलाज के लिए डॉक्टर के पास जाते हैं। ऐसी मनोवृति ग्रामीण समाज में देखी जाती है।

स्वास्थ्य के प्रति उत्तरदाताओं की मनोवृत्ति को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

सारणी संख्या 3: स्वास्थ्य के संबंध में उत्तरदाताओं का दृष्टिकोण

क्र.सं.	अच्छे स्वास्थ्य का आधार	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	ग्रामीण जीवन नगरीय जीवन से उत्तम है।	32	20.00
2.	अत्यधिक भोजन करने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है।	66	41.25
3.	उत्तम स्वास्थ्य ईश्वर की कृपा का परिणाम है।	62	38.75
	कुल योग	160	100.00

सारणी संख्या–3 से यह जानने की कोशिश की गई कि अच्छे स्वास्थ्य का आधार क्या है? उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि 41.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं की राय है कि खूब भोजन करो, अच्छा खाना–पीना खाओ, गरिष्ठ भोजन करो, घी,दूध खूब खाओ–पीयो, स्वास्थ्य स्वयं ठीक रहेगा। दूसरी बात इसी जवाब से यह उभरकर आती है कि रोग का कारण है अच्छा और खूब खाना–पीना नहीं करना। 38.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि उत्तम स्वास्थ्य इश्वर की कृपा का फल है। यही कारण है कि रोग के संदर्भ में यह पुरातन संस्कार, परम्परागत विचार व्यक्ति अतार्किक क्रियाकलाप निदानात्मक अभिकरण के रूप में करता है। 20.00 प्रतिशत लोग इस तथ्य से सहमत देखे गए कि ग्रामीण जीवन नगरीय जीवन से उत्तम है।

इसप्रकार उपर्युक्त तथ्यों से ग्रामीण समाज में स्वास्थ्य व रोग से संबंधित यथार्थ स्पष्ट होता है। आज ग्रामीण समाज के लोग आधुनिक चिकित्सा के शरण में हैं, लेकिन स्वास्थ्य व रोग के प्रति आज भी उनका दृष्टिकोण परम्परागत मूल्यों से प्रभावित है। यही कारण है कि एलोपैथी के अलावे भी लोग अतिरिक्त इंतेजाम में विश्वास रखते हैं। जैसे–पूजा–पाठ, अनुष्ठान, जंतर–मंतर इत्यादि।

अतः आज ग्रामीण समाज के लोग आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के प्रभाव में हैं। यह सामाजिक मूल्यों में हुए परिवर्तनों को दर्शाता है, किन्तु इसके साथ–साथ चिकित्सा एवम् स्वास्थ्य से संबंधित पुरातन विश्वासों से भी संबद्ध है। अतएव इससे संबंधित परम्परागत अवधारणाओं का अस्तित्व आज भी मौजूद है।

इसप्रकार स्वास्थ्य की आधुनिक अवधारणा से ग्रामीण समाज ने अर्थपूर्ण समन्वय कर लिया है।

संदर्भ सूची

1. नरेन्द्र सिंह तोमर, स्वच्छ गांव, स्वस्थ गांव, कुरूक्षेत्र, नवंबर, 2018।
2. निशि भाट, स्वच्छ, स्वस्थ समाज से ही होगा स्वस्थ देश का निर्माण, कुरूक्षेत्र, नवम्बर, 2018।
3. वी. श्री निवास, सभी के लिए किफायती स्वास्थ्य सेवा का लक्ष्य, कुरूक्षेत्र, जुलाई, 2017।
4. डा0 जगदीप सक्सेना, सभी के लिए स्वच्छ पेयजल, स्वच्छता और स्वास्थ्य का लक्ष्य।
5. मनीषा वर्मा, स्वस्थ महिलाएँः देश के विकास की नींव, कुरूक्षेत्र, जनवरी 2018।
6. पंखुडी दत्त, भारत में ग्रामीण स्वास्थ्य देखभाल, कुरूक्षेत्र, जनवरी, 2021।